

# मुद्रास्फीति क्या है?



- मुद्रास्फीति (Inflation) किसी अर्थव्यवस्था में समय के साथ वस्तुओं और सेवाओं के सामान्य मूल्य स्तर में होने वाली निरंतर वृद्धि है।
- जब मुद्रास्फीति होती है, तो मुद्रा की प्रत्येक इकाई कम वस्तुएं और सेवाएँ खरीद पाती है, जिससे प्रभावी रूप से क्रय शक्ति (Purchasing Power) कम हो जाती है।
- इसे आमतौर पर उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (CPI) में वार्षिक प्रतिशत वृद्धि के रूप में मापा जाता है।
- बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में मध्यम मुद्रास्फीति सामान्य है, लेकिन उच्च मुद्रास्फीति बचत को खत्म कर सकती है और बाजारों को अस्थिर कर सकती है। उच्च मुद्रास्फीति का अर्थ है कि कीमतें तेजी से बढ़ रही हैं, जबकि कम मुद्रास्फीति का अर्थ है कि कीमतें धीमी गति से बढ़ रही हैं।

# कारणों के आधार पर मुद्रास्फीति के प्रकार।

## माँग-प्रेरित मुद्रास्फीति

यह तब होता है जब कुल माँग (Aggregate Demand), कुल आपूर्ति (Aggregate Supply) से अधिक हो जाती है। "बहुत अधिक पैसा, बहुत कम वस्तुओं का पीछा करता है" वाली स्थिति पूरी अर्थव्यवस्था में कीमतों को ऊपर ले जाती है।

## लागत-जन्य मुद्रास्फीति

यह तब होता है जब उत्पादन की लागत या इनपुट (उत्पादन में लगने वाली सामग्री) की कीमतें बढ़ जाती हैं, जिससे व्यवसाय कीमतों को बढ़ाने के लिए मजबूर हो जाते हैं। बढ़ती मजदूरी, कच्चे माल या ऊर्जा की लागत इसके सामान्य कारण हैं।

## अंतर्निहित मुद्रास्फीति

यह अनुकूलक अपेक्षाओं (Adaptive Expectations) का परिणाम है, जहाँ श्रमिक भविष्य की मुद्रास्फीति की प्रत्याशा में उच्च मजदूरी की माँग करते हैं, जिससे मजदूरी-मूल्य सर्पिल (Wage-price spiral) का चक्र बन जाता है।

## संरचनात्मक मुद्रास्फीति

यह तब होती है जब आर्थिक समस्याओं जैसे कि कठोर आपूर्ति श्रृंखला (Rigid Supply Chains) या एकाधिकार बाजार संरचनाओं (Monopolistic Market Structures) के कारण विशिष्ट क्षेत्रों में समय-समय पर कीमतें बढ़ती हैं।

## प्रोटीन मुद्रास्फीति

यह प्रोटीन युक्त खाद्य पदार्थों जैसे दालों, अंडों और मांस की कीमतों में होने वाली वृद्धि को संदर्भित करता है, जो अक्सर माँग में बदलाव या आपूर्ति की बाधाओं के कारण होती है।

# दर (Rate) के आधार पर मुद्रास्फीति के प्रकार।

## रेंगती मुद्रास्फीति (हल्की या कम मुद्रास्फीति)

कीमतों में क्रमिक वृद्धि, जो आमतौर पर सालाना 3% से कम होती है; इसे प्रबंधनीय माना जाता है और यह मांग और निवेश को सकारात्मक रूप से प्रोत्साहित कर सकती है।

## चलती मुद्रास्फीति (सरपट दौड़ती या मध्यम मुद्रास्फीति)

कीमतें मध्यम गति से बढ़ती हैं, जो आम तौर पर 3% से 10% प्रति वर्ष के आसपास होती हैं। यदि इसे अनियंत्रित छोड़ दिया जाए, तो यह अर्थव्यवस्था के 'ओवरहीटिंग' (Overheating) का कारण बन सकती है।

## सरपट मुद्रास्फीति (हॉपिंग या रनिंग मुद्रास्फीति)

यह तब होता है जब कीमतें दहाई या तिहाई अंकों (double-or triple-digit) की वार्षिक दरों पर, यानी 10% से 50% के बीच तेजी से बढ़ती हैं। यह आर्थिक स्थिरता को बाधित करता है और उपभोक्ताओं की क्रय शक्ति (purchasing power) को गंभीर रूप से प्रभावित कर सकता है।

## अति-मुद्रास्फीति

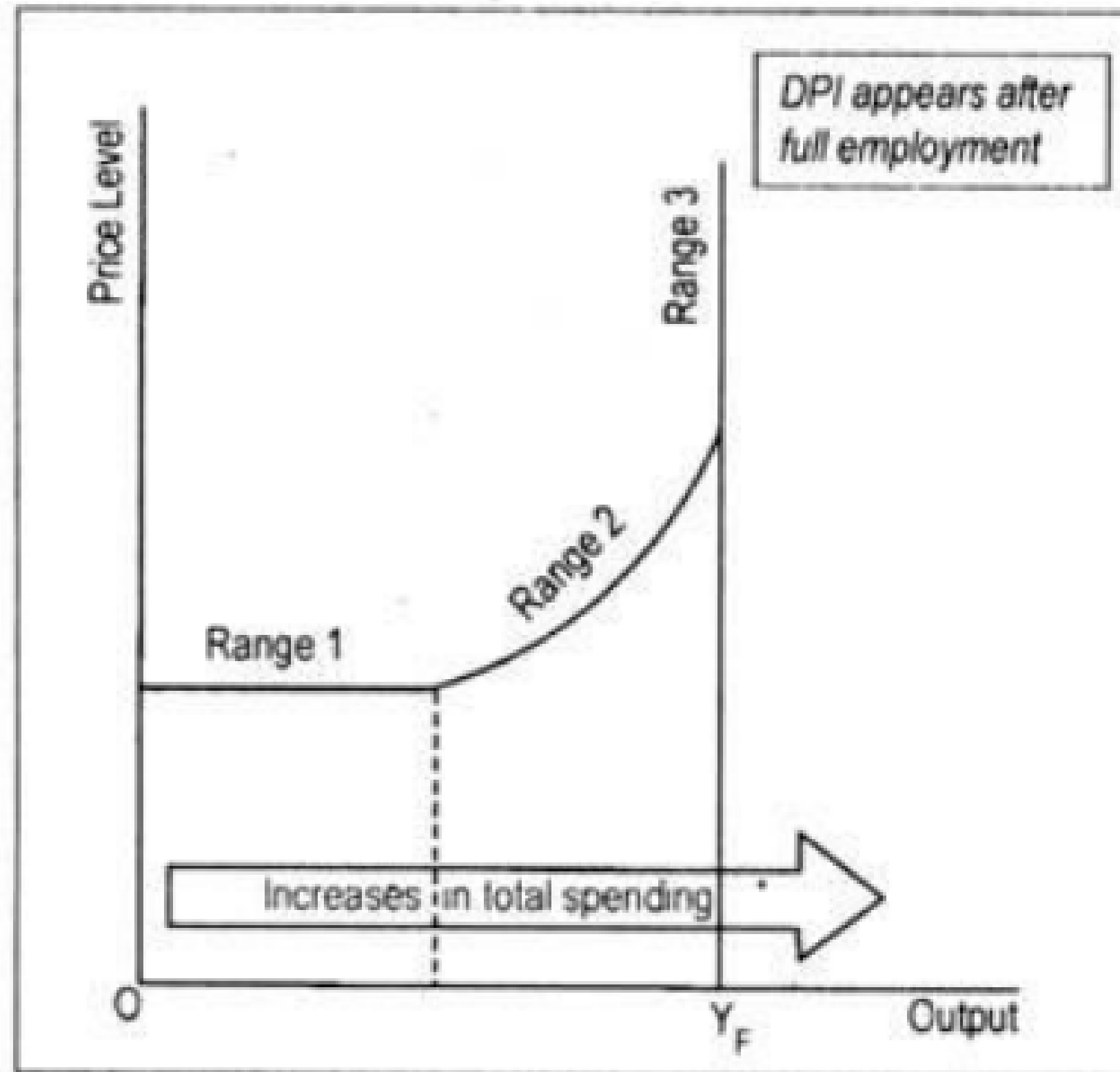
यह मुद्रास्फीति का अत्यधिक रूप है जहाँ कीमतें मासिक रूप से 50% से अधिक बढ़ जाती हैं। अति-मुद्रास्फीति (Hyperinflation) किसी मुद्रा के मूल्य को पूरी तरह से नष्ट कर सकती है, जैसा कि ऐतिहासिक रूप से जिम्बाब्वे और जर्मनी के वाइमर गणराज्य में देखा गया है।



# माँग-प्रेरित मुद्रास्फीति (DPI)

- उपलब्ध उत्पादन की तुलना में कुल माँग (aggregate demand) में वृद्धि होने से मूल्य स्तर में वृद्धि होती है। इस प्रकार की मुद्रास्फीति को माँग-प्रेरित मुद्रास्फीति (Demand-Pull Inflation - DPI) कहा जाता है।
- लेकिन कुल माँग क्यों बढ़ती है? क्लासिक अर्थशास्त्री (Classical economists) कुल माँग में इस वृद्धि का कारण मुद्रा आपूर्ति (money supply) को मानते हैं। यदि किसी अर्थव्यवस्था में धन की आपूर्ति उपलब्ध वस्तुओं और सेवाओं से अधिक हो जाती है, तो DPI उत्पन्न होती है। कोलबोर्न (Coulborn) ने इसे ऐसी स्थिति के रूप में वर्णित किया है जहाँ "बहुत अधिक पैसा बहुत कम वस्तुओं का पीछा कर रहा है।"
- कीन्सवादी (Keynesians) एक अलग तर्क देते हैं। उनका तर्क है कि कुल माँग या खर्च में स्वायत्त वृद्धि हो सकती है, जैसे कि उपभोग की माँग, निवेश या सरकारी खर्च में वृद्धि, या कर कटौती, या निर्यात में शुद्ध वृद्धि (अर्थात्  $C + I + G + X - M$ ), भले ही मुद्रा आपूर्ति में कोई वृद्धि न हो। यह मूल्य स्तर में ऊपर की ओर समायोजन को प्रेरित करेगा।
- इस प्रकार, DPI मौद्रिक कारकों (क्लासिक समायोजन) और गैर-मौद्रिक कारकों (कीन्सवादी तर्क) के कारण होती है।
- DPI को चित्र 4.2 के माध्यम से समझाया जा सकता है, जहाँ हम क्षैतिज अक्ष (horizontal axis) पर उत्पादन और ऊर्ध्वाधर अक्ष (vertical axis) पर मूल्य स्तर को मापते हैं। रेंज 1 में, कुल खर्च पूर्ण रोजगार उत्पादन (YF) की तुलना में बहुत कम है। यहाँ मूल्य स्तर में बहुत कम या बिल्कुल भी वृद्धि नहीं होती है। जैसे-जैसे अब माँग बढ़ती है, उत्पादन बढ़ेगा। अर्थव्यवस्था रेंज 2 में प्रवेश करती है, जहाँ उत्पादन पूर्ण रोजगार की स्थिति की ओर बढ़ता है। ध्यान दें कि इस क्षेत्र में मूल्य स्तर बढ़ना शुरू हो जाता है। अंततः, अर्थव्यवस्था पूर्ण रोजगार की स्थिति यानी रेंज 3 में पहुँच जाती है, जहाँ उत्पादन नहीं बढ़ता लेकिन मूल्य स्तर ऊपर की ओर खिंचता है। यही माँग-प्रेरित मुद्रास्फीति है। इस प्रकार की मुद्रास्फीति का सार यह है कि "बहुत अधिक खर्च बहुत कम वस्तुओं का पीछा कर रहा है।"





**Fig. 4.2: Demand-pull Inflation**

# माँग-प्रेरित मुद्रास्फीति के कारण।

## 1. अत्यधिक मुद्रा आपूर्ति (मौद्रिक दृष्टिकोण)।

- **पैसा छापना:** जब सरकार या केंद्रीय बैंक मुद्रा की आपूर्ति बहुत तेज़ी से बढ़ाते हैं, तो लोगों के पास अतिरिक्त नकदी आ जाती है।
- **खर्च में वृद्धि:** जैसे-जैसे लोग इस अतिरिक्त नकदी को खर्च करते हैं, वे सीमित वस्तुओं की कीमतें बढ़ा देते हैं। यह तब तक जारी रहता है जब तक कि मूल्य स्तर नई मुद्रा आपूर्ति के बराबर न हो जाए।

## 2. वास्तविक क्षेत्र में परिवर्तन (कीन्सवादी दृष्टिकोण)।

मुद्रास्फीति कुल माँग (AGGREGATE DEMAND) के घटकों (C + I + G + शुद्ध निर्यात) में गैर-मौद्रिक बदलावों से भी शुरू हो सकती है:

- **उपभोग (C):** व्यक्तिगत आयकर में कटौती से परिवारों के पास खर्च करने योग्य आय (DISPOSABLE INCOME) बढ़ जाती है, जिससे खर्च बढ़ता है।
- **निवेश (I):** यदि व्यवसायी भविष्य को लेकर आशावादी होते हैं और नई परियोजनाओं या उपकरणों पर अपना खर्च बढ़ाते हैं, तो माँग में अचानक उछाल आता है।
- **सरकारी खर्च (G):** सरकारी व्यय में वृद्धि—विशेष रूप से यदि इसे करों के बजाय पैसा छापकर वित्तपोषित किया गया हो—मुद्रास्फीति का एक प्रमुख चालक है।

## 3. जनसंख्या वृद्धि।

बढ़ती जनसंख्या स्वाभाविक रूप से बुनियादी आवश्यकताओं और सेवाओं की माँग को बढ़ाती है। यदि इन वस्तुओं की आपूर्ति उसी गति से नहीं बढ़ती है, तो कीमतें बढ़ जाती हैं।

## 4. विदेशी व्यापार और निर्यात आय।

जब कोई देश निर्यात से अधिक कमाता है, तो यह घरेलू अर्थव्यवस्था में अतिरिक्त क्रय शक्ति लाता है। यह अतिरिक्त आय वस्तुओं और सेवाओं की स्थानीय माँग को बढ़ाती है।

## 5. सार्वजनिक ऋण का पुनर्भुगतान।

जब सरकार जनता से लिए गए ऋण को वापस चुकाती है, तो यह नागरिकों के हाथों में अधिक पैसा डाल देती है। **तरल नकदी (LIQUID CASH)** में यह वृद्धि निजी खर्च और कुल माँग को बढ़ाती है।

## 6. काला धन और दिखावटी उपभोग।

"काला धन" (बेहिसाबी संपत्ति) रखने वाले लोग अक्सर इसे विलासिता की वस्तुओं या **"दिखावटी उपभोग"** (CONSPICUOUS CONSUMPTION) पर फिजूलखर्ची में लगाते हैं। यह अचानक और भारी खर्च मुद्रास्फीति की आग में घी डालने का काम करता है।

# लागत-जन्य मुद्रास्फीति

- कुल माँग (aggregate demand) के साथ-साथ, कुल आपूर्ति (aggregate supply) भी मुद्रास्फीति की प्रक्रिया को जन्म देती है। चूँकि यह मुद्रास्फीति कुल आपूर्ति के बाईं ओर खिसकने (leftward shift) के कारण होती है, इसलिए हम इसे CPI (लागत-जन्य मुद्रास्फीति) कहते हैं।
- CPI आमतौर पर गैर-मौद्रिक कारकों से जुड़ी होती है। CPI उत्पादन की लागत में वृद्धि के कारण उत्पन्न होती है। उत्पादन की लागत कच्चे माल की कीमत में वृद्धि या मजदूरी में वृद्धि के कारण बढ़ सकती है। हालाँकि, मजदूरी में वृद्धि से श्रमिकों की उत्पादकता (productivity) बढ़ सकती है। यदि ऐसा होता है, तो AS वक्र (AS curve) बाईं ओर के बजाय दाईं ओर खिसकेगा। यहाँ हम यह मान रहे हैं कि मजदूरी में वृद्धि के बावजूद उत्पादकता में कोई बदलाव नहीं होता है। लागत में इस तरह की वृद्धि को फर्मों द्वारा उत्पादों की कीमतें बढ़ाकर उपभोक्ताओं पर डाल दिया जाता है।
- बढ़ती मजदूरी से लागत बढ़ती है। बढ़ती लागत से कीमतें बढ़ती हैं। और, बढ़ती कीमतें फिर से ट्रेड यूनियनों को उच्च मजदूरी की माँग करने के लिए प्रेरित करती हैं। इस प्रकार, एक मुद्रास्फीति संबंधी मजदूरी-मूल्य सर्पिल (wage-price spiral) शुरू हो जाता है। इसके कारण कुल आपूर्ति वक्र बाईं ओर खिसक जाता है।
- इसे ग्राफ के माध्यम से प्रदर्शित किया जा सकता है जहाँ  $AS_1$  प्रारंभिक कुल आपूर्ति वक्र है। पूर्ण रोजगार के चरण से नीचे यह AS वक्र धनात्मक ढाल (positive sloping) वाला होता है और पूर्ण रोजगार के चरण में यह पूरी तरह से बेलोचदार (perfectly inelastic) हो जाता है।  $AD_1$  और  $AS_1$  वक्रों का प्रतिच्छेदन बिंदु ( $E_1$ ) मूल्य स्तर ( $OP_1$ ) निर्धारित करता है। अब कुल आपूर्ति वक्र में  $AS_2$  की ओर बाईं ओर बदलाव होता है। कुल माँग में कोई बदलाव न होने के कारण, इससे मूल्य स्तर बढ़कर  $OP_2$  हो जाता है और उत्पादन गिरकर  $OY_2$  हो जाता है। उत्पादन में कमी के साथ, अर्थव्यवस्था में रोजगार घटता है या बेरोजगारी बढ़ती है। AS वक्र के  $AS_3$  की ओर और खिसकने से मूल्य स्तर और उच्च ( $OP_3$ ) हो जाता है और कुल उत्पादन की मात्रा कम ( $OY_3$ ) हो जाती है। इस प्रकार, CPI पूर्ण रोजगार ( $Y_F$ ) के चरण से नीचे भी उत्पन्न हो सकती है।

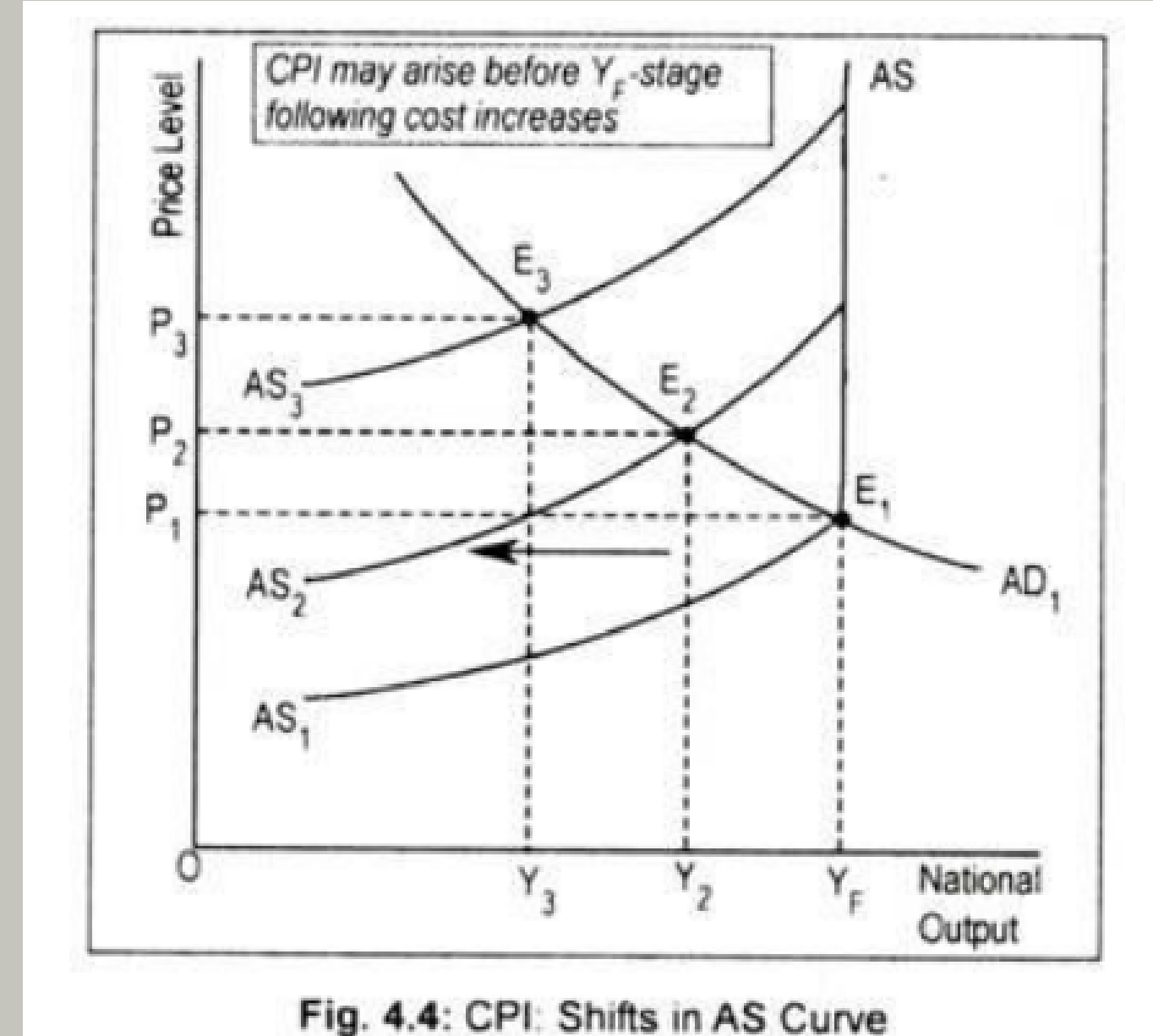


Fig. 4.4: CPI: Shifts in AS Curve

# लागत-जन्य मुद्रास्फीति के कारण|

लागत-जन्य मुद्रास्फीति (Cost-push inflation) शायद ही कभी किसी एक घटना का परिणाम होती है। यह आमतौर पर एक "डोमिनो इफेक्ट" (Domino Effect) होता है, जहाँ एक क्षेत्र (जैसे ईंधन या मजदूरी) में बढ़ती लागत पूरी अर्थव्यवस्था को प्रभावित करती है।

## 1. कच्चे माल की बढ़ती लागत|

- **सरकारी कार्रवाई:** पेट्रोल, डीजल या बिजली जैसे आवश्यक इनपुट की कीमतें बढ़ाने के फैसले (अक्सर प्रशासनिक आदेशों के माध्यम से) फर्मों के लिए उत्पादन लागत को तुरंत बढ़ा देते हैं।
- **आयातित मुद्रास्फीति (Imported Inflation):** यदि आवश्यक वस्तुओं की वैश्विक कीमतें बढ़ती हैं (जैसे ओपेक द्वारा तेल की कीमतें बढ़ाना), तो घरेलू कीमतों को भी उसका अनुसरण करना पड़ता है, जिससे लगभग हर क्षेत्र—विशेष रूप से परिवहन—प्रभावित होता है।

## 2. मजदूरी-प्रेरित मुद्रास्फीति (Wage-Push Inflation)|

- **श्रम की माँगें:** ट्रेड यूनियन अक्सर जीवनयापन की लागत के साथ तालमेल बिठाने के लिए उच्च मजदूरी के लिए बातचीत करते हैं।
- **उत्पादकता का अंतर:** यदि मजदूरी श्रमिकों के वास्तविक उत्पादन (उत्पादकता) की तुलना में तेजी से बढ़ती है, तो फर्मों इन अतिरिक्त श्रम लागतों का बोझ उच्च कीमतों के माध्यम से उपभोक्ताओं पर डाल देती हैं।

## 3. लाभ-प्रेरित मुद्रास्फीति (Profit-Push Inflation)|

- **बाजार की शक्ति:** कम प्रतिस्पर्धा वाली बड़ी कंपनियाँ अपने लाभ मार्जिन (Profit margins) का विस्तार करने के लिए जानबूझकर कीमतें बढ़ा सकती हैं, भले ही उपभोक्ता की माँग वास्तव में न बढ़ी हो।

## 4. राजकोषीय नीति और कर|

- **अप्रत्यक्ष कर:** जब सरकार बड़े पैमाने पर खपत वाली वस्तुओं पर उत्पाद शुल्क (excise duties) या बिक्री कर बढ़ाती है, तो इन वस्तुओं की लागत तुरंत बढ़ जाती है। यही कारण है कि अक्सर सरकारों पर मुद्रास्फीति को "प्रेरित" करने का आरोप लगाया जाता है।

## 5. आपूर्ति श्रृंखला में बाधाएँ|

- **प्राकृतिक कारक:** आपदाएं, बिजली कटौती, या प्राकृतिक संसाधनों की कमी कुल उत्पादन में अचानक गिरावट का कारण बन सकती हैं।
- **कृत्रिम कमी (Artificial Scarcity):** व्यापारी और जमाखोर "नकली" कमी पैदा करने के लिए स्टॉक छिपा सकते हैं, जिससे संकट के दौरान कीमतें और भी बढ़ जाती हैं।

## 6. संरचनात्मक अक्षमताएँ|

- **खराब प्रबंधन:** भ्रष्टाचार, आर्थिक कुप्रबंधन और औद्योगिक हड़तालें संसाधनों की बर्बादी और कम दक्षता की ओर ले जाती हैं, जो अंततः उत्पादन को अधिक महंगा बनाती हैं।

# मुद्रास्फीति का नियंत्रण।

सरकारें और केंद्रीय बैंक मुद्रास्फीति (महंगाई) से निपटने के लिए दो मुख्य नीतिगत दृष्टिकोण अपनाते हैं। राजकोषीय नीति (Fiscal policy) में सरकारी खर्च और कराधान (Taxation) के निर्णय शामिल होते हैं, जबकि मौद्रिक नीति (Monetary policy) केंद्रीय बैंक के माध्यम से मुद्रा की आपूर्ति को नियंत्रित करने पर ध्यान केंद्रित करती है। दोनों का उद्देश्य अतिरिक्त माँग को कम करना और कीमतों को स्थिर करना है, और अधिकतम प्रभावशीलता के लिए ये अक्सर मिलकर काम करते हैं।

## मौद्रिक नीति

केंद्रीय बैंक मुद्रा की आपूर्ति और ब्याज दरों को नियंत्रित करते हैं। इसके प्रमुख उपकरणों में उधार लेने को हतोत्साहित करने के लिए ब्याज दरें बढ़ाना, बैंकों के लिए आरक्षित आवश्यकताओं (reserve requirements) में वृद्धि करना और सरकारी प्रतिभूतियों (securities) को बेचना शामिल है। ये उपाय मुद्रा के संचलन और ऋण की उपलब्धता को कम करते हैं, जिससे मुद्रास्फीति का दबाव ठंडा पड़ता है। मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने वाले मौद्रिक उपायों का उद्देश्य आमतौर पर मौद्रिक आय को कम करना होता है।

ये उपाय निम्नलिखित हैं:

**(a) ऋण नियंत्रण (Credit Control):** केंद्रीय बैंक मुद्रा की आपूर्ति कम करने के लिए ऋण की मात्रा और गुणवत्ता को नियंत्रित करने के कई तरीके अपनाता है। इस उद्देश्य के लिए, यह बैंक दरों को बढ़ाता है, खुले बाजार में प्रतिभूतियां बेचता है, आरक्षित अनुपात (reserve ratio) बढ़ाता है, और कई चयनात्मक ऋण नियंत्रण उपाय अपनाता है, जैसे मार्जिन आवश्यकताओं को बढ़ाना और उपभोक्ता ऋण को विनियमित करना।

**(b) मुद्रा का विमुद्रीकरण (Demonetisation of Currency):** एक अन्य मौद्रिक उपाय उच्च मूल्यवर्ग (denominations) की मुद्रा का विमुद्रीकरण करना है। ऐसा उपाय आमतौर पर तब अपनाया जाता है जब देश में काले धन की प्रचुरता होती है।

**(c) नई मुद्रा जारी करना (Issue of New Currency):** सबसे चरम मौद्रिक उपाय पुरानी मुद्रा के स्थान पर नई मुद्रा जारी करना है। इस प्रणाली के तहत, एक नए नोट को पुरानी मुद्रा के कई नोटों के बदले बदला जाता है। ऐसा उपाय तब अपनाया जाता है जब नोटों का अत्यधिक निर्गमन (issue) हो जाता है और अर्थव्यवस्था में अति-मुद्रास्फीति (hyperinflation) की स्थिति होती है।

# राजकोषीय नीति।

सरकार मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने के लिए कराधान (taxation) और व्यय का उपयोग करती है। प्रमुख उपायों में खर्च करने योग्य आय (disposable income) को कम करने के लिए करों को बढ़ाना, माँग को कम करने के लिए सरकारी खर्च में कटौती करना और बजट घाटे को कम करना शामिल है। ये क्रियाएं अर्थव्यवस्था में समग्र माँग को कम करती हैं, जिससे कीमतों को स्थिर करने में मदद मिलती है। मुख्य राजकोषीय उपायों की चर्चा नीचे दी गई है:

**(a) अनावश्यक व्यय में कटौती (Reduction in Unnecessary Expenditure):** मुद्रास्फीति पर अंकुश लगाने के लिए सरकार को गैर-विकासात्मक गतिविधियों पर होने वाले अनावश्यक खर्च को कम करना चाहिए।

**(b) करों में वृद्धि (Increase in Taxes):** व्यक्तिगत उपभोग व्यय में कटौती करने के लिए व्यक्तिगत, कॉर्पोरेट और वस्तु करों की दरों को बढ़ाया जाना चाहिए और यहाँ तक कि नए कर भी लगाए जाने चाहिए, लेकिन करों की दरें इतनी अधिक नहीं होनी चाहिए कि वे बचत, निवेश और उत्पादन को हतोत्साहित करें।

**(c) बचत में वृद्धि (Increase in Savings):** एक अन्य उपाय लोगों की बचत में वृद्धि करना है ताकि उनकी खर्च करने योग्य आय और क्रय शक्ति कम हो जाए। इसके लिए सरकार को विभिन्न प्रोत्साहन देकर बचत को बढ़ावा देना चाहिए।

**(d) अधिशेष बजट (Surplus Budget):** एक महत्वपूर्ण उपाय मुद्रास्फीति-रोधी बजटीय नीति को अपनाना है। इस उद्देश्य के लिए, सरकार को घाटे की वित्त व्यवस्था (deficit financing) को छोड़ देना चाहिए और इसके बजाय अधिशेष बजट (surplus budgets) रखना चाहिए। इसका अर्थ है राजस्व के रूप में अधिक संग्रह करना और कम खर्च करना।

**(e) सार्वजनिक ऋण (Public Debt):** इसके अतिरिक्त, सरकार को सार्वजनिक ऋण का पुनर्भुगतान बंद कर देना चाहिए और इसे भविष्य की किसी तारीख तक के लिए स्थगित कर देना चाहिए जब तक कि मुद्रास्फीति के दबाव नियंत्रित न हो जाएं। इसके बजाय, जनता के पास मुद्रा की आपूर्ति कम करने के लिए सरकार को और अधिक ऋण लेना चाहिए।

# मुद्रास्फीति का प्रभाव

मुद्रास्फीति अर्थव्यवस्था के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित करती है, जिसमें क्रय शक्ति कम करने और ब्याज दरों को बढ़ाने से लेकर आय की असमानता को चौड़ा करने और निवेश के प्रतिफल (returns) को प्रभावित करना शामिल है। यह निर्यात प्रतिस्पर्धात्मकता को भी बाधित करती है और व्यावसायिक लागतों को बढ़ाती है, जिससे आर्थिक योजना बनाना जटिल हो जाता है।

**मुद्रास्फीति के प्रभाव (Impacts of Inflation):**

- 1. क्रय शक्ति में कमी (Reduced Purchasing Power):** मुद्रास्फीति धन की क्रय शक्ति को कम कर देती है, जिसका अर्थ है कि उपभोक्ता समान आय के साथ कम वस्तुएं और सेवाएं खरीद पाते हैं। यह अंततः उनके जीवन की गुणवत्ता और जीवन स्तर को प्रभावित करता है।
- 2. ब्याज दरों में वृद्धि (Increased Interest Rates):** मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने के लिए, केंद्रीय बैंक अक्सर ब्याज दरें बढ़ा देते हैं। इससे व्यक्तियों और व्यवसायों के लिए कर्ज लेना अधिक महंगा हो जाता है, जो आर्थिक विकास और निवेश गतिविधियों को धीमा कर सकता है।
- 3. आय की असमानता (Income Inequality):** मुद्रास्फीति विभिन्न आय समूहों को असमान रूप से प्रभावित करती है। कम आय वाले परिवारों को इसका झटका अधिक महसूस होता है क्योंकि उनकी आय का एक बड़ा हिस्सा अनिवार्य वस्तुओं (जैसे भोजन) पर खर्च होता है, जिससे सामाजिक-आर्थिक वर्गों के बीच की खाई और बढ़ जाती है।
- 4. निवेश प्रतिफल (Investment Returns):** मुद्रास्फीति निवेश पर मिलने वाले वास्तविक लाभ (real returns) को कम कर देती है, विशेष रूप से निश्चित आय वाली संपत्तियों (fixed-income assets) पर, क्योंकि प्रतिफल की वास्तविक क्रय शक्ति घट जाती है। यह बचत और दीर्घकालिक निवेश को हतोत्साहित कर सकता है।
- 5. निर्यात प्रतिस्पर्धात्मकता (Export Competitiveness):** घरेलू कीमतों में वृद्धि निर्यात को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कम प्रतिस्पर्धी बना देती है, क्योंकि विदेशी खरीदार कहीं और सस्ते विकल्प तलाश सकते हैं। यह उन उद्योगों को नुकसान पहुँचा सकता है जो राजस्व के लिए निर्यात पर निर्भर हैं।
- 6. व्यावसायिक लागत और योजना (Business Costs and Planning):** मुद्रास्फीति व्यवसायों के लिए परिचालन लागत बढ़ा देती है, विशेष रूप से कच्चे माल और श्रम में। इससे मूल्य निर्धारण (pricing) और दीर्घकालिक योजना बनाने में चुनौतियाँ पैदा होती हैं क्योंकि व्यवसाय अपने लाभ मार्जिन (profit margins) को बनाए रखने के लिए संघर्ष करते हैं।



# मुद्रास्फीति के प्रभाव|

## 1. आय और धन का पुनर्वितरण (Redistribution of Income and Wealth)|

मुद्रास्फीति आय और धन को एक हाथ से दूसरे हाथ में पुनर्वितरित करती है। इसके परिणामस्वरूप लोगों के एक समूह को हानि होती है और दूसरे समूह को लाभ होता है।

## 2. ऋणदाता बनाम ऋणी (Borrower Vs Lender)|

इसमें ऋणी (उधार लेने वाला) लाभ में रहता है और लेनदार (उधार देने वाला) नुकसान में रहता है।

उदाहरण के लिए: मान लीजिए कि एक ऋणी 5% वार्षिक ब्याज दर पर 100/- रुपये उधार लेता है। उसे अगले वर्ष लेनदार को 105/- रुपये चुकाने हैं। लेकिन, यदि एक वर्ष में मुद्रास्फीति 5% से अधिक बढ़ जाती है, तो जो सामान इस वर्ष 100/- रुपये में खरीदा जा सकता था, वह अगले वर्ष 105/- रुपये में नहीं खरीदा जा सकेगा। इसलिए, लेनदार के लिए पैसे का प्रभावी मूल्य कम हो जाता है।

## 3. उत्पादक बनाम उपभोक्ता (Producer Vs Consumer)|

उपभोक्ताओं के पास मौजूद धन की क्रय शक्ति (Purchasing power) गिर जाती है। इसलिए, उन्हें समान मात्रा में वस्तुओं और सेवाओं के लिए उत्पादकों को अधिक पैसा देना पड़ता है। इस प्रकार, उत्पादक लाभ में रहता है और उपभोक्ता नुकसान में।

## 4. लचीली आय समूह बनाम निश्चित आय समूह (Flexible Vs Fixed Income Group)|

लचीली आय समूह जैसे विक्रेता, स्व-नियोजित आदि, जिनका वेतन मुद्रास्फीति के अनुसार समायोजित हो जाता है, वे प्रभावित नहीं होते हैं। दूसरी ओर, निश्चित आय समूह जैसे दैनिक वेतन भोगी कर्मचारियों को नुकसान होता है क्योंकि उनकी निश्चित आय की क्रय शक्ति घट जाती है।

## 5. डिबेंचर या बॉन्ड धारक बनाम जारीकर्ता (Bond Holders Vs Issuers)|

बॉन्ड जारी करने वाले लाभ में रहते हैं और बॉन्ड धारकों को नुकसान होता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि बॉन्ड के लिए भुगतान की गई निश्चित ब्याज दर मुद्रास्फीति की भरपाई करने के लिए पर्याप्त नहीं होती है।

## 6. इक्विटी धारक (Equity Holders)|

इक्विटी धारकों की आय कंपनी के लाभ पर निर्भर करती है। मुद्रास्फीति की स्थिति में कंपनियाँ अधिक लाभ कमाती हैं। इसलिए, इक्विटी धारक भी अधिक आय अर्जित करते हैं।

# मुद्रास्फीति के प्रभाव|

## 2. उत्पादन और उपभोग पर प्रभाव (EFFECTS ON PRODUCTION AND CONSUMPTION)|

कीमतों में वृद्धि से वस्तुओं और सेवाओं की माँग में गिरावट आती है। परिणामस्वरूप, यह उत्पादन में कटौती करने के लिए मजबूर कर सकता है। इससे निवेश का अन्य क्षेत्रों से उन क्षेत्रों की ओर स्थानांतरण (SHIFT) भी हो सकता है जिनमें कीमतों में वृद्धि हुई है (क्योंकि निवेशक उच्च लाभ कमाना चाहते हैं)।

## 3. मुद्रास्फीति के अन्य प्रभाव (OTHER EFFECTS OF INFLATION)|

- **बचत (SAVINGS):** चूँकि मुद्रास्फीति पैसे के मूल्य को कम कर देती है, इसलिए नकदी के रूप में पैसा रखना एक समझदारी भरा आर्थिक निर्णय नहीं है। इसलिए, लोग मुद्रास्फीति के प्रभाव को बेअसर करने के लिए बैंकों में पैसा जमा करना पसंद करेंगे।
- **विकास और रोजगार (GROWTH AND EMPLOYMENT):** अल्पकाल (SHORT RUN) में, मुद्रास्फीति में वृद्धि के साथ आमतौर पर आर्थिक विकास और रोजगार में वृद्धि होती है। लेकिन, दीर्घकाल (LONG TERM) में, यह आवश्यक रूप से सच नहीं होता है।
- **भुगतान संतुलन (BALANCE OF PAYMENT - BOP):** उच्च कीमतें निर्यात को कम करती हैं और उन अन्य देशों से आयात को बढ़ाती हैं जहाँ वस्तुएं सस्ती दर पर उपलब्ध हैं। इसका परिणाम प्रतिकूल भुगतान संतुलन (UNFAVORABLE BOP) के रूप में निकलता है।
- **विनिमय दर (EXCHANGE RATE):** उच्च आयात और कम निर्यात का अर्थ है घरेलू मुद्रा के मुकाबले विदेशी मुद्राओं की उच्च माँग। इससे घरेलू मुद्रा का अवमूल्यन (DEPRECIATION) होता है।
- **सामाजिक और राजनीतिक प्रभाव (SOCIAL AND POLITICAL IMPACTS):** कीमतों के उच्च स्तर से सामाजिक और राजनीतिक तनाव पैदा होता है, जैसे हड़ताल, धरना आदि।

# निष्कर्ष।

अंततः, मुद्रास्फीति (महंगाई) एक बहुआयामी आर्थिक घटना है, जिसकी पहचान सामान्य मूल्य स्तर में निरंतर होने वाली वृद्धि से होती है, जो समय के साथ प्रभावी ढंग से मुद्रा की क्रय शक्ति को कम कर देती है। चाहे यह माँग की अधिकता (Demand-Pull), उत्पादन लागत में वृद्धि (Cost-Push), या अंतर्निहित अपेक्षाओं (Built-In) के कारण शुरू हुई हो, इसका प्रभाव अर्थव्यवस्था के हर स्तर पर गूँजता है। जहाँ मध्यम मुद्रास्फीति को अक्सर बढ़ती अर्थव्यवस्था के संकेत के रूप में देखा जाता है, वहीं अत्यधिक या अस्थिर मूल्य वृद्धि से उपभोक्ताओं की बचत में कमी, अंतरराष्ट्रीय व्यापार में विकृति और निवेशकों के लिए महत्वपूर्ण अनिश्चितता पैदा हो सकती है। इन कारणों और उनके दूरगामी प्रभावों के बीच के जटिल संतुलन को समझकर, नीति निर्माता मूल्य स्थिरता बनाए रखने और दीर्घकालिक आर्थिक स्वास्थ्य सुनिश्चित करने के लिए राजकोषीय और मौद्रिक रणनीतियों को बेहतर ढंग से लागू कर सकते हैं।





**Thank You**